नामांक Roll No.

No. of Questions — 25

No. of Printed Pages — 7

VU—38–1—Hindi Sah. I

वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा, 2011

वैकल्पिक वर्ग I (OPTIONAL GROUP I — HUMANITIES)

हिन्दी साहित्यम् — प्रथम पत्र

(HINDI SAHITYAM — First Paper)

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे

पूर्णांक : 60

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्नपत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं । प्रश्न संख्या **23**, **24** एवं **25** में आन्तरिक विकल्प हैं ।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें ।
4. जिस प्रश्न के एक से अधिक समान अंकवाले भाग हैं, उन सभी भागों का हल एक साथ सतत् लिखें ।
5. प्रश्न क्रमांक **1** के चार भाग (i, ii, iii तथा iv) हैं । प्रत्येक भाग के उत्तर के चार विकल्प (**अ, ब, स** एवं **द**) हैं । सही विकल्प का उत्तराक्षर उत्तर-पुस्तिका में निम्नानुसार तालिका बनाकर लिखें :

प्रश्न क्रमांक	सही उत्तर का क्रमाक्षर
1. (i)	
1. (ii)	
1. (iii)	
1. (iv)	

1. (i) 'आशीर्वाद' नामक निबंध के रचनाकार हैं

(अ) विद्यानिवास मिश्र (ब) बालमुकुन्द गुप्त

(स) पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी (द) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल । $\frac{1}{2}$

(ii) 'बिन्दा' को यातना किसने दी ?

(अ) निष्ठुर स्वामी (ब) अत्याचारी पति

(स) कठोर विमाता (द) क्रूर पिता । $\frac{1}{2}$

(iii) तुलसीदास के मन में आत्महत्या का विचार आने का कारण था

(अ) काशी के पंडितों द्वारा अपमान (ब) मोहिनी मोह

(स) पुलिस द्वारा अपमान (द) रत्नावली के कटु वचन । $\frac{1}{2}$

(iv) 'रानी केतकी की कहानी' के रचनाकार हैं

(अ) इंशा अल्ला खाँ (ब) सदासुख लाल

(स) सदल मिश्र (द) लल्लू लाल । $\frac{1}{2}$

2. गांधीजी ने विलायत में कुटुम्ब के साथ रहना छोड़कर अलग रहना क्यों शुरू किया ?

(उत्तर सीमा लगभग 30 शब्द) 1

3. 'आखिरी चट्टान' यात्रावृत्त में लड़कियों द्वारा आत्महत्या का क्या कारण बताया है ?

(उत्तर सीमा लगभग 30 शब्द) 1

4. तुलसीदास के जन्म के समय राजनीतिक स्थिति कैसी थी ?

(उत्तर सीमा लगभग 40 शब्द) $1\frac{1}{2}$

5. हिन्दी के विकास में आर्य समाज ने किस प्रकार योगदान किया ?

(उत्तर सीमा लगभग 40 शब्द) $1\frac{1}{2}$

6. 'कवि और कविता' निबंध में बताये गये प्रभावोत्पादकता नामक प्रधान धर्म को स्पष्ट कीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

7. प्रेमचंद ने साहित्य को देशकाल का प्रतिबिंब क्यों बताया है ?

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

8. 'ममता का विष' एकांकी में किसकी मामता कैसे विषकारी बन रही थी ?

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

9. 'आत्म-विश्लेषण' निबंध में लेखक ने बड़े आदमियों के किन-किन रोगों का उल्लेख किया है ?

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

10. तुलसीदास के बाल्यकाल के बारे में बताइये ।

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

11. तुलसीदास चोरी से बगीचे में क्या देखने गये थे ?

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

12. प्रगतिवाद की कोई **चार** प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

13. 'गर्मियों में पहाड़ पर' में पहाड़ी लोगों में किस प्रकार के बदलाव की बात की गयी है ?

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

14. तुलसीदास ने स्थान-स्थान पर अखाड़े स्थापित करने की प्रेरणा क्यों दी ?

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

15. तुलसीदास ने मठ के महंत का पद क्यों छोड़ा ?

(उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

16. तुलसीदास के स्थान पर आप होते तो, रत्नावली को काशी से वापस भेजकर कैसा अनुभव करते ? (उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 2

17. नई कविता की कोई **चार** प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 100 शब्द) 3

18. साक्षात्कार एवं डायरी विधा का परिचय दीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 100 शब्द) 3

19. हिन्दी के विकास में इँशा अल्ला खाँ एवं मुंशी सदासुख लाल के योगदान का परिचय दीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 100 शब्द) 3

20. हिन्दी शब्दावली का वर्गीकरण सहित समुचित परिचय दीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 100 शब्द) 3

21. हिन्दी आलोचना के उद्‌भव एवं विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 150 शब्द) 4

22. 'क्षात्रधर्म का सौन्दर्य' निबंध के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 150 शब्द) 4

23. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या लगभग 200 शब्दों में कीजिए : 4

''परशुराम चाहे ज्ञान-विज्ञान की जानकारी का बोझ ढोने में भीष्म के समकक्ष न रहे हों, पर सीधी बात को सीधे समझने में निश्चय ही वह उनसे बहुत आगे थे । वह भी ब्रह्मचारी थे — बाल ब्रह्मचारी ! पर भीष्म जब अपने निर्वीर्य भाइयों के लिए कन्याहरण कर लाये और एक कन्या को अविवाहित रहने के लिए बाध्य किया तब उन्होंने भीष्म के इस अशोभन कार्य को क्षमा नहीं किया । समझाने-बुझाने तक ही नहीं रुके, लड़ाई भी की । पर भीष्म अपनी प्रतिज्ञा के शब्दों से चिपटे ही रहे । वह भविष्य नहीं देख सके, वह लोक-कल्याण को नहीं समझ सके ।''

अथवा

''जब यह कुतूहल उत्कंठा बन जाता है और उत्कंठा व्यष्टि के लिए न होकर समष्टि के लिए हो जाती है, तो जीवन का रंग उतरने नहीं पाता, जीवन का स्वाद बिगड़ने नहीं पाता और शरीर चाहे कैसा भी हो, किसी भी अवस्था में ढोलक की थाप के साथ जिन्दगी का तराना फूटने को आकुल हो उठता है । ठूंठ होते जाते पेड़ में भी जैसे वसन्त आने पर एक-दो फुनगी आए बिना नहीं रहती, एक दो फूल खिले बिना नहीं रहते ।''

24. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लगभग 200 शब्दों में कीजिए : 4

''साहित्य के दो विभाग आदिकाल से ही रहे हैं — प्रथम सिद्धान्त पक्ष, दूसरा अनुभूति पक्ष । सिद्धान्तों से प्रेरणा ग्रहण कर, साहित्य जीवन में अवतरित हुआ । इसी के आधार पर, साहित्य के आदर्श और यथार्थ — दो रूप बनते चले आये हैं । जहाँ दोनों मिल गये, वहाँ आदर्शोन्मुख यथार्थ बन गया । मेरी दृष्टि यथार्थोन्मुख आदर्श रही है । सिद्धान्तवादी साहित्य की अपेक्षा अनुभूति के क्षणों में बंधा हुआ साहित्य वास्तव में साहित्य की संज्ञा से विभूषित होता है । उसी में जीवन दर्शन है और भविष्य जीवन की प्रेरणा है ।''

अथवा

''भारतीयों में कुछ नया सीखने की मानसिक सामर्थ्य तो है ही, उनमें से ज्यादातर में होड़ में उतरने का मिजाज भी है, जो उनके उद्योग-उपक्रमी स्वभाव को दर्शाता है । आज इनके इस जोश को उचित मार्ग प्रदान करने वाली पर्याप्त प्रणालियाँ नहीं हैं जहाँ से उनकी उत्पादकता और रचनात्मकता प्रवाहित हो सके । हमें इस दिशा में प्रयास करने होंगे । हमारी तकनीकी परिकल्पना की प्रयोजनाओं में ऐसे अनेक तत्त्व मौजूद हैं, जो भारत में इस कीमती साधन से लाभान्वित हो सकेंगे ।''

25. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लगभग 200 शब्दों में कीजिए : 3

''उन्होंने रत्नावली को कई बार इस हीन भावना से ग्रस्त होते हुए देखा है । जब यह हीनता उसे सताती है तो कभी-कभी वह मन ही मन में उग्र भी हो उठते हैं । अपनी पत्नी के रूप और गुणों पर प्राणपण से मुग्ध होकर भी तुलसीदास रत्ना के स्वभाव की इस तिक्तता में कहीं पर बहुत खिन्न भी हैं । इस हीन भावना के जागने पर रत्नावली कभी-कभी ईर्ष्यालु भी हो जाती है । तुलसीदास के अन्तः सौन्दर्य बोध को इससे धक्का लगता है । इस धक्के में अपने आपको बचाने के लिए उनकी चेतना भीतर ही भीतर विकल हो उठती है ।''

अथवा

''मैं महात्मा कबीरदास जी को उच्चतम आत्माओं में से एक मानता हूँ । उन्होंने दूसरों की बुराइयों की तीव्र आलोचना करके अपने को संवारा । परन्तु मैं अपनी और समाज की खरी आलोचना करके दोनों को एक निष्ठा से बांधकर उठना चाहता हूँ । टूटी झोंपड़ियों के बीच में अकेले महल की कोई शोभा नहीं होती । वह अपनी सारी भव्यता और कलात्मकता में क्रूर और गंवार लगता है ।''